Paper CC07 : Applied Theory

राग शुद्ध नट

परिचय

राग नट अथवा शुद्ध नट बिलावल थाट के अंतर्गत है। इस राग में सभी शुद्ध स्वरों का प्रयोग किया जाता है। राग का वादि स्वर मध्यम एवं संवादि स्वर षड़ज हैं। परन्तु कुछ विद्वानों के अनुसार, इस राग का वादि स्वर पंचम तथा संवादि स्वर षड़ज मान्य हैं। इस राग का गायन समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। राग नट अथवा शुद्ध नट, पूर्वांग में सासा रेरे गग मम प – स्वर संगति से स्पष्ट होता हैं तथा उत्तरांग में पध पप सां नि ध प म – स्वर संगति से स्पष्ट होता हैं। इस राग में मध्यम स्वर प्रबल हैं, अर्थात् मध्यम स्वर का प्रयोग ज्यादा किया जाता हैं। जैसे – रे ग मऽ, ग म ऽ, प म ऽ, सा रे सा। मध्यम स्वर गंधार की संगति से खुलकर जोरदार होता हैं।

इस राग की जाति में कई विद्वानों ने भिन्न–भिन्न मत दिए हैं। कुछ विद्वानों के अनुसार, इस राग के आरोह–अवरोह में निषाद का प्रयोग नहीं किया जाता हैं। इसके अनुसार राग का चलन कुछ इस प्रकार होगा – पध पप सां ऽ ऽ, सां ध प म ऽ, ग म ऽ। अन्य विद्वानों के अनुसार, राग के आरोह में निषाद का प्रयोग वर्जित हैं, जबकि अवरोहात्मक निषाद का प्रयोग किया जाता हैं। यथा – पध पप सां ऽ ऽ, सां नि ध प म, ग ऽ म ऽ। अतः इस राग की जाति षाड़व–षाड़व तथा षाड़व–सम्पूर्ण मानी गई हैं। निषाद का प्रयोग अवरोह में कभी कभी वक्र रूप से भी लिया जाता हैं। इस राग के सारे प्राचीन बंदिशों में मुख्यतः वर्षा ऋतु का वर्णन ही पाया गया है।

विष्णु नारायण भातखण्डे जी के संगीतशास्त्र में कुछ ऐसे ग्रंथों का उल्लेख किया गया हैं, जिसमें नट के बारे में जानकारी दिया गया हैं। नट के विवरण से अपने पास जितने भी नट के स्वरूप प्राप्त होते हैं, उसका कोई संबंध नहीं है। कई विद्वानों व संगीतज्ञों ने नट के स्वरूप को भिन्न–भिन्न तरीके से दर्शाया हैं। यहाँ हम राग नट के भिन्न–भिन्न प्रकार के स्वर–समूह को देखेंगे, जिससे हमें राग के बारे में और भी विस्तार से समझने को मिलेंगे–

- ओंकारनाथ ठाकुर जी के अनुसार–
  सा रे रे ग, ग ग, म म प, रे रे ग म प रे,ग म रे, सा ऽ ऽ। पध पप सां ऽ नि ध प, प रे, रे ग म प, ग म रे सा, सा रे रे ग, ग ग, म रे सा।
- विष्णु नारायण भातखण्डे जी के अनुसार–
  सा ग, ग रेग म, प म, ग ग, म प, सां ध नि प, म ग, रे ग, म प ऽ, सा रे सा ऽ।
- विनायक राव पटवर्धन की ''राग विज्ञान'' में–

सा रे सा, ग म रे सा, रे ग ग, म म प, प ध पप, सां ध प, प म ग, म रे, सा रे सा, रे ग म प, प ध प, प सां ऽ, सांध प प, सां रें सां, रें गं मं रें सां।

- जयपुर तथा आगरा घराने के अनुसार,
  सा रे सा, रे ग म, रे म, सा रे सा, पध पप ग म रे म, सा रे सा, पध पप, ध प, ध म, ग म रे म ऽ, सां ध प ग म रे म, सा रे रे, ग ग, म म, रे म, सा रे सा, रे ग म प, ग म रे म, सा रे सा।
- डागुर घराने के अनुसार,
  स म, ग प ऽ, प ध पप, म ग म रे, सा रे, रे ग, ग म, ग म रे सा, पध पप, नि ध ऽ ऽ, नि प, सां प ध पप, म ग, सा म ग प, ग म ध प, म ग म रे सा।

<u>स्वर विस्तार</u>

- सा रे ऽ सा, रे ग म, रे म ऽ, सा रे ऽ सा, सा ध़ प़ ऽ, सा ऽ ऽ, सा नि़ ध़ प़, प़ध़ प़प़ सा ऽ रे सा, रे ग म, म प म, ग ऽ म ऽ, पध पप म ग म ऽ, ग म रे म, सा रे–, रे ग–, ग म–, रे रे म, सा रे सा ऽ।
- पध पप सां ऽ ध प, म ग म, रे ग म प म ग म ऽ, सा म ऽ, ग म ऽ, प म ऽ, ग म रे म, सा रे सा, सासा रेरे गग मम प ऽ ऽ, पध पप सां ऽ, सां रें सां, सां नि ध प म ऽ, ग म ऽ रे म ऽ, सा रे सा।